③ [ ] + [6] = [6]

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 3 के अंक — कुल अंक

प्रश्न-1

उत्तर:-

करुण रस का स्थाई भाव 'शोक' है, तथा श्रृंगार रस का स्थाई भाव 'रति' है।

प्रश्न-2

उत्तर:-

विभाषा अर्थात बोली का व्यापक रूप जो बोली के क्षेत्र की अपेक्षा वृहत होता है। विभाषा का क्षेत्र भाषा से कम पर बोली से विस्तृत होता है।

विभाषा के उदाहरण:- बृज, अवधि

प्रश्न-3

उत्तर:- नाटक और एकांकी में अंतर-

1.) नाटक में कई अंक, कई घटनायें, कई पात्र होते हैं, जबकि एकांकी में एक ही अंक एवं कम पात्र होते हैं।

2.) नाटक में पात्रों से संबंधित कथाओं, संस्मरण आदि का भी वर्णन होता है, जबकि एकांकी में किसी एक घटना का ही वर्णन होता है, उससे जुड़े संस्मरण, कथानकों का नहीं।

पृ

6	+	3	=	9
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक

प्रश्न-4

उत्तर :- व्याज स्तुति अलंकार की पहचान हेतु काव्य को पढ़ने सुनने से ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी की निंदा की जा रही हो, पर उस निंदा में आराधना छिपी होती है। अतः निंदा जहाँ प्रतीत हो, वह व्याज स्तुति की पहचान है।

व्याज निंदा की पहचान हेतु काव्य को पढ़ने सुनने से ऐसा प्रतीत होता है, जैसे किसी की स्तुति की जा रही हो, पर उसमें निंदा निहित होती है।

प्रश्न- 5

उत्तर:-(अ) पानी-पानी होना :-

अर्थ:- अत्यधिक लाज/शर्मसार होना

वाक्य:- परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के कारण रमन शर्म से पानी-पानी हो गया।

(ब) नौ-दो ग्यारह होना :-

अर्थ:- भाग जाना

वाक्य:- सिंह को समीप आता देख मृग समूह नौ-दो ग्यारह हो गया।

5

9	+	8	=	17
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 5 के अंक		कुल अंक

प्रश्न-6

उत्तर:-

उन गीतों को 'लोकगीत' के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न-7

उत्तर:- दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले ऐतिहासिक धारावाहिक-

1.) टीपू सुल्तान

2.) पृथ्वीराज चौहान

प्रश्न-8

उत्तर:-(अ) वह गुणवती महिला है।

(ब) सच को कपड़े पहनाने में लोग नंगे हो गये।

प्रश्न-9

उत्तर:-(अ) गणित का प्रश्नपत्र सरल नहीं आया है।

(ब) जो व्यक्ति सच्चरित्र होते हैं, ~~उन्हें~~ उन्हें सभी चाहते हैं।

B S E M P

8

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न-10

उत्तर:- ~~छप्पय छंद~~ छप्पय छंद के प्रथम चार चरणों में 24-24 मात्रायें होती हैं, जो 11 और 13 मात्राओं के विराम से होती हैं। अंतिम ~~चर~~ दो चरणों में 13 और 15 के विराम से 28 मात्रायें होती हैं। यह छंद रोला व उल्लाला के मिलने से बनता है।

प्रश्न-11

उत्तर:- रहस्यवादी कवि-

1.) कबीर

2.) जयशंकर प्रसाद

B
S
E
M
P

प्रश्न-12

उत्तर:- मनुष्य जाति का इतिहास बुराईयों व उनके सुधारों का इतिहास रहा है। हर काल में बुराईयाँ पैदा होती हैं, तथा उनके उन्मूलन हेतु समाज सुधारकों के सुधार पैदा होते है।

प्राचीन काल में वैदिक धर्म की बुराईयों (बलि, कर्मकाण्ड) को मिटाने महावीर स्वामी, बुद्ध पैदा हुये तो मध्यकाल में शंकराचार्य, कबीर, नानक जैसे सुधारक। तो आज आधुनिक काल में राम मोहन राय, गाँधी जैसे सुधारक पैदा हुये। हर काल में सुधारों की आवश्यकता महसूस हुई है।

कल की सुधार-नीतियां अब बुराई बन गये है।

7 | 20 | + | 6 | = | 26
योग पूर्व पृष्ठ | | | पृष्ठ 7 के अंक | | कुल अंक

भूतकाल के सुधारों ने बुराईयों का रुप धारण कर लिया है इसलिये आज भी सुधार कार्य जारी है। मानव सभ्यता का हर काल ; जब-जब उसमें बुराईयां जन्म लेती है, वहीं आज सुधारों की आवश्यकता होती है।

3

प्रश्न-13

उत्तर:- समाज को नई दिशा देने प्रेरणा-दायी साहित्य उपयोगी है। समय के साथ-साथ समाज में परिवर्तन आया है। नई-नई बुराईयों ने जन्म लिया है, अतएव ऐसा साहित्य जो उन बुराईयों के उन्मूलन हेतु लोगों में प्रेरणा जगाये।

~~उदाहरण~~ उदाहरणार्थ यदि समाज में सांप्रदायिक, जातिवाद फैला है तो एकतावादी, समन्वयवादी साहित्य हो। देश आपातिक हो तो वीर रस का देशभक्ति साहित्य हो। गरीबों, मजदूरों की उपेक्षा हो रही हो तो प्रगतिशील साहित्य उपयोगी होता है।

सारांश में कहा जा सकता है कि जो साहित्य समाज को तथासमयानुसार प्रेरणा दे सके, वह समाज को नई दिशा देने में सहायक होता है।

6

3

प्रश्न - 14

उत्तर :- गद्य की प्रमुख विधायें —

1.) कहानी
2.) उपन्यास
3.) नाटक
4) एकांकी
5.) निबंध
6.) आलोचना

प्रश्न - 15

उत्तर :- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में रामप्रसाद बिस्मिल का योगदान निम्न बिंदुओं के आधार पर रेखांकित किया जा सकता है —

1. सक्रिय क्रांतिकारी :-

रामप्रसाद बिस्मिल सक्रिय क्रांतिकारी थे, वे अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न रहे।

2.) काकोरी काण्ड :-

बिस्मिल ने काकोरी काण्ड में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने सरकारी खजाने को लूटकर क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम दिया।

3.) वतन पर कुर्बान शहीद :-

काकोरी काण्ड और क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण उन्हें फांसी दी गई। जो देश के स्वतंत्रता संग्राम (आंदोलन) में महत्वपूर्ण कड़ी है।

प्रश्न-16

उत्तर:- कहानी में निम्न तथ्य होते हैं-

1.) कथानक (कथावस्तु)
2.) संवाद (कथोपकथन)
3) पात्र, चरित्र चित्रण
4) देश, काल, वातावरण
5.) उद्देश्य
6.) रोचकता

उद्देश्य:-

कहानी का कुछ न कुछ उद्देश्य होता है। कहानी की सफलता उसके उद्देश्य पर निर्भर करती है। इसका महत्व निम्न कारणों से है-

1.) लक्ष्य की अभिव्यक्ति उद्देश्य से की जाती है।
2.) कहानी का सारांश उसका उद्देश्य होता है।
3.) कहानी का उद्देश्य उसे ऊंचाइयो तक ले जाता है। प्रेमचंद की कहानियों का उद्देश्य गरीबों की दशा पर आधारित था इसलिये वे प्रसिद्ध हुईं।

3

प्रश्न-17

उत्तर:- भारतेन्दु युगीन निबंधों की विशेषतायें-

1. इस युग के निबंध राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, पत्रकारिता आदि के विषयों से संबंधित हैं।
2. इन निबंधों में भाषा काफी सरल, व्यंग्य पूर्ण, मुहावरों का प्रयोग, तत्सम-तद्भव व उर्दू का प्रयोग हुआ है। व्यंग इन निबंधों में काफी किये गये हैं।

(10) 34 + 6 = 40
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 10 के अंक | कुल अंक

3. इन निबंधों में सरसता, रोचकता है। साथ ही तीखी एवं कटु सत्यों को सरसता से व्यक्त किया गया है।

प्रश्न-18

उत्तर :- पुरस्कार कहानी में प्रेम व कर्तव्य का अद्भुत समन्वयन किया गया है। 'प्रेम और कर्तव्य' का सरस-सजीव चित्रण इस कहानी में देखा गया है।

एक ओर मधुलिका (नायिका) मगध के राजकुमार अरुण से प्रेम करती है, तो वहीं दूसरी ओर अरुण मधुलिका के राज्य कौशल पर आक्रमण की योजना बनाता है। आदर्श नागरिक के कर्तव्य का पालन कर मधुलिका निजी प्रेम को गौण कर अपने प्रेमी को गिरफ्तार कराकर कर्तव्य पालन करती है, वहीं दूसरी ओर जब उसके प्रेमी को मृत्युदंड दिया जाता है तो वह भी मृत्युदंड मांग कर आदर्श प्रेमिका का फर्ज़ निभाती है। अतएव प्रेम और कर्तव्य का अद्भुत संघर्ष इस कहानी में देखने मिलता है।

6

(11) | 50 | + | 3 | = | 53 |

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 11 के अंक — कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न-19

उत्तर:- मानव की उन्नति हेतु विज्ञान की सहायता-

1.) अनुसंधानों, आविष्कारों से मानव की उन्नति:-

विभिन्न आविष्कार जैसे यातायात, संचार, उद्योग आदि से मानव जाति की उन्नति हुई है।

2.) मानव जाति के स्तर को सर्वश्रेष्ठ बनाने मे सहायक:-

आदिमानव से आज का सभ्य समाज विज्ञान के कारण ही निर्मित हो सका है। आज मानव जाति अन्य जीवो से श्रेष्ठ ~~विज~~ वैज्ञानिक कार्यो से ही है।

3.) मानव सुविधाओं की उन्नति!-

विज्ञान ने विभिन्न मशीनें बनाकर मानव को सुविधा प्रदान की है, जिससे उसने सामाजिक, आर्थिक उन्नति की है।

3

कृ.प.उ.

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 12 के अंक = कुल अंक

प्रश्न-२०

उत्तर:- छायावाद की विशेषतायें:-

(1.) नारि सौन्दर्य एवं प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण:-

छायावाद की मुख्य विशेषतायें नारि सौन्दर्य एवं प्राकृतिक सौन्दर्य का सरस चित्रण है। जिसे चित्रात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है।

(2.) प्रेम, विरह वेदना का वर्णन:-

छायावादी कवियो ने प्रेम, विरह वेदना का वर्णन मार्मिक शैली में किया है। विरह वेदना के गीतों में महादेवी वर्मा का विशेष महत्व है।

(3.) ~~रहे~~ कल्पनाओं, दर्शन व रहस्यवाद:-

इस काल की कविताओं में कल्पनाओं का प्रमुख स्थान है। रहस्यवाद भी छायावादी कविताओं में छलकता है। ईश्वर के प्रति विरह, अद्वैत वाद दर्शन आदि दीख पड़ता है, वहीं आकाशातीत कल्पनायें प्रमुख विशेषतायें हैं।

(4.) श्रृंगार रस, अलंकार एवं काव्य सौन्दर्य:-

छायावादी काव्य में सौंदर्यवर्णन, एवं प्रेम-वर्णन के कारण

श्रृंगार पूर्ण पराकाष्ठा के साथ प्रयुक्त हुआ है। नये-पुराने अलंकार, पुरातन एवं नूतन छंद एवं अति काव्य-सौन्दर्य देखने मिलता है।

5

* छायावाद के प्रवर्तक कवि 'जयशंकर प्रसाद' माने गये हैं

प्रश्न-21

उत्तर:- कुकुरमुत्ता कविता में गुलाब और कुकुरमुत्ता का वर्णन है। गुलाब सौन्दर्य एवं विलासिता का प्रतीक माना जाता है, तथा कुकुरमुत्ता गंदगी का, अतएव गुलाब की तुलना पूंजीपति (कैपिटलिस्ट) तथा कुकुरमुत्ता की तुलना मजदूर (सर्वहारा) से की गई है। जिस प्रकार गुलाब के विकास, पालन-पोषण में माली, बाग आदि की विशेष भूमिका रहती है, वह खाद का चूस बड़ा होता है। इससे व्यक्त किया गया है, कि पूंजीपति अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु सर्वहारा का शोषण कर करके उसका खून चूसते हैं।

वहीं कुकुरमुत्ता जो गंदगी में पलता है, उसके संरक्षण हेतु माली, बाग, पानी-खाद नहीं है। इससे यह प्रदर्शित किया गया है कि उपेक्षित सर्वहारा वर्ग गंदी बस्तियों में ~~पल~~ पलता है, उसे न तो अच्छा भोजन मिलता है न ही दैनिक वस्तुयें। सारी वस्तुयें पूंजीपतियों ने अपने संरक्षण में ले ली है और वे गरीबों के हितों की ~~उपेक्षा~~ उपेक्षा कर उनका शोषण करते हैं।

BSEMP

8

5

प्रश्न-22

उत्तर- 'सहयोग, श्रम व शांति' के माध्यम से कवि ने निम्न समस्यायें प्रस्तुत की हैं:-

1. शोषण:-

समाज में अधिकारिक वर्ग गरीबों के हितों की उपेक्षा कर उनका शोषण कर रहा है। यह समस्या उजागर की गई है।

2. सामाजिक असमानता:-

समाज में व्याप्त असमानता गहन समस्या है। एक वर्ग जो उन्नति के शिखर पर है तो वहीं दूसरा वर्ग पाताल में।

3. भाग्यवाद एवं अंधविश्वास:-

कवि ने समाज में फैले अंधविश्वास एवं भाग्यवाद पर भरोसा जैसी समस्यायें उकेरी हैं। ये ही शोषण को आधार एवं शस्त्र हैं।

4. संपदा पर एकाधिकार:-

वर्तमान समाज में पूंजीपतियों ने संपदा-साधनों पर अपना एकाधिकार जमा लिया है, जिससे आम-आदमी उसके उपभोग से वंचित हैं।

कविता में कवि ने उक्त समस्याओं को प्रस्तुत किया है।

प्रश्न-२३

उत्तर:- कवि ने 'ऊषा' व 'कालरात्रि' शब्दों का प्रयोग निम्न तथ्यों को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से किया है-

- कालरात्रि अर्थात मृत्यु की रात। महाप्रलय रात्रि में हुआ था, जिससे सारी सृष्टि मृत्यु नींद में सो गयी। सम्पूर्ण जीव-समूहों की मृत्यु हो गयी। अतः वह रात्रि काल के समान थी। मृत्यु का प्रतीक थी अतएव कवि ने ~~प्र~~ मृत्यु बिंब को प्रदर्शित करने 'कालरात्रि' शब्द का प्रयोग किया है।

- ऊषा अर्थात प्रातः काल की देवी। ऊषा पूजनीय देवी हैं, जो सुख, नूतन सृजन का ~~प्रक~~ प्रतीक है। सुबह के प्रारंभ से मानव नये कार्यों को प्रारंभ करता है, अतएव कालरात्रि के ~~ऊ~~ उपरांत नूतन सृजन होना था, जो प्रातः काल के प्रारंभ से प्रारंभ हुआ। चूंकि ऊषा सुबह की देवी, सृजन का प्रतीक है। ~~प्रकृ~~ प्रकृति का नये सिरे से विकास प्रारंभ सुबह से हो रहा था अतएव उस नूतन सृजन की सुबह को 'ऊषा' कहा गया।

5

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न- 24।

उत्तर :- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(अ) रचनायें :- अनामिका, परिमल

(ब) भावपक्ष :-

1\. प्रारंभिक दौर मे निराला छायावादी एवं रहस्यवादी कवियो मे गिने जाते थे. जिससे आपके भावपक्ष में कल्पनाओं, रहस्यों का समागम मिलता है।

2\. आपके भावों से गरीबों, शोषितों का समर्थन तथा शोषणकारियों को का विद्रोह झलकता है।

(स) कला पक्ष :-

1\. आपकी ~~भाषा~~ कला शैली काफी उन्नत है। एक ओर आपने शुद्ध परिष्कृत भाषा में कवितायें लिखीं। अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया। मधुर वसंत एवं प्रेम गीतों की रचना की।

2\. प्राचीन छंदों से विद्रोह एवं मुक्त कविता आपकी कला शैली है।

3

BSEMP

प्रश्न-25

उत्तर:- महादेवी वर्मा

(अ) रचनायें:- यामा, अतीत के चलचित्र

(ब) भाषा- शैली:-

1. आपकी भाषा शुद्ध, परिष्कृत खड़ी बोली है।
2. भाषा शुद्धि, परिमार्जन आपकी भाषागत विशेषता है।
3. मुहावरों का प्रयोग आपके साहित्य में देखने को मिलता है।
4. चित्रात्मक शैली के कारण आप प्रसिद्ध हैं।
5. मार्मिक व्यथा का वर्णन करने की शैली सर्वश्रेष्ठ है।

(स) साहित्य में स्थान:-

* छायावाद एवं रहस्यवाद की कवियत्री।
* रेखाचित्र एवं संस्मरण की सिरमौर।
* नारि-साहित्य में सर्वश्रेष्ठ।
* चित्रात्मक शैली के कारण साहित्य में अलग स्थान है।

BSEMP

3

3

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न-26

उत्तर :-

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश 'सरदार पूर्ण सिंह' द्वारा रचित 'सच्ची वीरता' विधा 'निबंध' से लिया गया है।

प्रसंग :- गद्यांश में वीर पुरुष को समाज का नेता बताते हुए कहा गया है कि सारा समाज उसका अनुकरण करता है।

व्याख्या :-

वीर पुरुष धीर-गम्भीर तथा आजाद होते हैं। उनके कार्य, उनके विचार, उनका चरित्र समाज अनुकृत करता है। वीर पुरुष जो सोचता है जो विचार करता है, वह कार्य, वह विचार वह चिंतन सम्पूर्ण समाज का हो जाया करता है। अर्थात वीर पुरुष का दिल और मन सबका दिल और मन हो जाता है। वीर पुरुष की संकल्प प्रेरणा से सम्पूर्ण समाज संकल्पित हो जाया करता है। वह युग सृजनेता है, जो नेतृत्व कर रहा है। वह अपने कार्यों से सम्पूर्ण समाज को दिशा देता है। उसे अपने-पराये का भेद नहीं रहता, वह समाजहित को ध्यान में रख कार्य कर समाज को दिशा देता है।

विशेष :-

(1.) संक्षेप में वीरता का अद्भुत वर्णन।
(2.) समाज को नई दिशा देने वीरपुरुषों का आह्वान।

5

प्रश्न-27

उत्तर !-

संदर्भ:- प्रस्तुत पद्यांश प्रगतिवादी कवि "रामधारी सिंह" दिनकर द्वारा रचित कुरुक्षेत्र महाकाव्य के 'श्रम, सहयोग व शांति' शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग:- प्रस्तुत काव्यांश में सामाजिक सुख हेतु सामाजिक समानता पर बल दिया गया है।

व्याख्या:- कवि कहते है कि सभी मनुष्यों के लिये समान रूप से सुख- संपदा, साधनों का वितरण होना चाहिए। परंतु सामाजिक असमानता से आक्रोश, कोलाहल, क्रांति एवं वर्ग संघर्ष बढ़ता चला जाएगा। प्रकृति ने साधनों को बहुतायत रूप में बनाया है, जिनका अंत नहीं है। पर सुख साधनों को आसानी से तब ही प्राप्त किया जा सकता है जब मनुष्य निजी स्वार्थों का त्याग कर साधनों पर एकाधिकार करना नहीं अपितु समान वितरण चाहेगा।

विशेष:-

* मार्क्सवादी (साम्यवादी) दृष्टिकोण।
* सामाजिक समानता पर बल।
* कुरुक्षेत्र महाकाव्य का अंश।
* भीष्म की युधिष्ठिर से वार्ता।

5

BSEMP

प्रश्न-28

उत्तर :-

(अ) शीर्षक — 'पर्यावरण-प्रदूषण : एक गंभीर समस्या'

(ब) सारांश:-

मानव ने विभिन्न आविष्कारों के द्वारा स्वयं ही पर्यावरण को प्रदूषित किया है। प्रकृति के समस्त तथ्य (जल, थल, वायु, ध्वनी) प्रदूषित हो गयी है। यह गंभीर समस्या मानव समाज के सामने मुँह खोले खड़ी है।

(5)

B S E M P

5

कृ॰प॰उ॰

21 | 17 + 5 = 22

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 21 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न-24-उत्तर!-

प्रति,

मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सी॰एम॰ओ॰)
जिला- सागर
स्वास्थ्य विभाग सागर (म॰प्र)

विषय:- अस्पताल में स्वास्थ्य सुविधा सुधार हेतु।

महोदय,

स्वास्थ्य व्यवस्था के तहत शासकीय अस्पतालों एवं संस्थाओं में स्वास्थ्य व्यवस्था काफी जर्जर होती जा रही है। गरीब एवं आर्थिक विपन्न लोगो की इन अस्पतालों में उपेक्षा व शोषण हो रहा है, जिससे गरीब जनता इन सुविधाओं से वंचित है।

अतः निवेदन है कि व्यवस्थाओं में सुधार किये जाये। गरीब जनता के हितों की उपेक्षा न हो, जिससे वे स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ ले सकें।

धन्यवाद

दिनांक
12/12/06

भवदीय
अ,ब,स

B S E M P

5

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न-30

उत्तर:- साहित्य और समाज

साहित्य और समाज परस्पर पूरक है। दोनों एक दूसरे पर निर्भर किया करते है। साहित्य अपनी विषय वस्तु के लिये समाज पर निर्भर करता है। अच्छा साहित्य वही कहा जा सकता है जिसमें व्यापक सामाजिक विवेचना होती है। वहीं दूसरी ओर समाज अपने चरमोत्कर्ष विकास, सुधार एवं सृजन, नई दिशा एवं चेतना के लिये साहित्य पर निर्भर करता है। कहा भी गया है-

"नयी राह दिखाता है साहित्य
अलख जगाता है है साहित्य
अंधेरे की बस्ती में
दीप जलाता है साहित्य।"

सच ही कहा गया है, कि समाज को नयी दिशा, नयी राह साहित्य दिखाता है। साहित्य सामाजिक विवेचना मात्र नहीं प्रेरणा भी है। प्रेमचंद ने आदर्श साहित्य के बारे में कहा है- "साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं दीपक भी है।" प्रेमचंद के इस कथन से स्पष्ट है कि साहित्य सिर्फ सामाजिक घटनाओं का प्रस्तोता ही नहीं है, उसे प्रेरणा देने वाला कारक भी है।

साहित्य तभी उन्नत होता है, जब समाज उसे

विषय देता है। सामाजिक घटनायें ही साहित्यकार की क़लम से साहित्य का विषय बन जाया करतीं हैं। उदाहरणार्थ मुगलकाल में जब सम्पूर्ण समाज में जातिवाद, सांप्रदायिकता की आग लग गई थी तब सूफी संतों ने साहित्य के माध्यम से उस आग को बुझाया। प्रेमचंद ने गरीब किसानों की ~~स्त्रयग्रसिता~~ को साहित्य का विषय बनाया। प्रगतिवादी साहित्यकारों ने समाज में व्याप्त शोषण, वर्ग भेद, सर्वहारा के अधिकारों को साहित्य का विषय बनाया।

फलत: सामाज में नई चेतना जागृत हो सकी। समाज को नई दिशा मिल सकी। प्रगतिवादी साहित्य की बात की जाये तो इसके माध्यम से शोषित सर्वहारा में अलख जागी और वे क्रांति को तत्पर हो गये। आजादी के समय रचा गया देशभक्ति साहित्य, जिसने सोये हुये भारतीयों में अलख जगा दी जिससे वे वतन पर जान देने के लिये तत्पर हो गये।

साहित्य

प्रेरणा ↓ ↑ विषयवस्तु

समाज

साहित्य समाज को रूढ़ियों, अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

BSEMP

यूरोप में पॉप ने जो धार्मिक अंधविश्वास फैलाया था, जिसके कारण वह स्वर्ग के टिकिट बेचता था, उस अंधविश्वास का पतन वहाँ के प्रगतिशील साहित्य के माध्यम से ही संभव हो सका है। था। मार्टिन लूथर ने अपने नये धामि धर्म का प्रतिपादन कर सात्विक मार्ग के माध्यम से इस अंध विश्वास से समाज एवं समस्त यूरोप को मुक्ति दिलाई थी।

साहित्य समाज का प्रेरणा स्रोत है तथा समाज साहित्य की बिषय वस्तु, अतएव दोनो एक दूसरे पर निर्भर है। साहित्यकारों का फ़र्ज़ है कि वे सामाजिक घटनाओं का न सिर्फ ब्यौरा दे, अपितु उनकी समीक्षात्मक वर्णन करें। यथासमय, यथाघटना तथा परिस्थितियों के अनुसार साहित्य सृजन करें। यदि समाज पर संकट है तो साहित्यकार साहित्य के माध्यम से उस संकट से समाज की सुरक्षा करे। ऐसी परिस्थिति में श्रृंगार, वात्सल्य की रचनायें करना शून्य है।

हिन्दी भाषा में प्रारंभिक दौर में साहित्य सिर्फ नारि-सौन्दर्य, धर्म और शासक वर्ग पर आधारित होता था, परंतु प्रगतिशील लेखकों ने ऐसे साहित्य का विरोध कर जनसामान्य पर साहित्य लिखा। उ- उन्होंनें राजमहल की नारि की सुंदरता का वर्णन न कर, तसला ढोती मजदूर स्त्री का वर्णन किया। जो समाज में प्रेरणा स्त्रोत बन गयी।

समाज का दायित्व है कि वह साहित्य द्वारा दी गई प्रेरणा का अनुशरण करे, उनकी उपेक्षा

2007

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

860379

1. केन्द्र की सील

2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक

3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

4. केन्द्र क्रमांक कोड नं. 242012

6. परीक्षा का नाम

7. विषय 8. माध्यम

8. दिनांक

पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

नहीं। यदि समाज अपना ... है कि वह साहित्य से प्रेरणा ले। अतः दोनों परस्पर भूमिका निभाये। साहित्य समाज का हो, और समाज साहित्य का।

B
S
E
M
P

के अंकों का योग